

भारत में महिलाओं की स्थिति

यह एडिटरियल 19/08/2022 को 'हृदिसूतान टाइम्स' में प्रकाशित "Is moral policing the newest deterrent to female labour force participation?" लेख पर आधारित है। इसमें भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिति और उनकी कार्यबल भागीदारी के बारे में चर्चा की गई है।

कार्य का रूप एवं सीमा, [राजनीतिक भागीदारी](#), [शिक्षा का स्तर](#), [स्वास्थ्य की स्थिति](#), [नरिणय कारी नकियों में प्रतनिधित्व](#), [संपत्तिक पहुँच](#) आदि कुछ प्रासंगिक संकेतक हैं, जो समाज में व्यक्तिगत सदस्यों की स्थिति को प्रकट करते हैं। हालाँकि समाज के सभी सदस्यों की, विशेष रूप से महिलाओं की उन कारकों तक एकसमान पहुँच नहीं रही है, जो स्थितिके इन संकेतकों का गठन करते हैं।

[पुत्रिसततात्मक मानदंड](#) भारतीय महिलाओं के शिक्षा एवं रोजगार विकल्पों को—जिनमें शिक्षा प्राप्त करने के विकल्प से लेकर कार्यबल में प्रवेश और कार्य की प्रकृतिक सब शामिल हैं, को सीमिति या प्रतबिंधित करते हैं।

इस परदृश्य में देश की लगभग आधी आबादी और नागरकितता की हसिसेदार महिलाओं की स्थिति पर वचिर करना प्रासंगिक होगा किवर्तमान में [स्वतंत्रता](#), [गरमि](#), [समानता](#) और [प्रतनिधित्व](#) के संघर्ष में वे कहाँ खड़ी हैं।

महिला सशक्तीकरण के बारे में संवधान क्या कहता है?

- [लैंगिक समानता](#) (gender equality) का सदिधांत भारतीय संवधान में नहिति है।
 - संवधान न केवल महिलाओं को समानता की गारंटी देता है, बल्कि राज्य को महिलाओं के पक्ष में सकारात्मक भेदभाव (positive discrimination) के उपाय करने की शक्ति भी प्रदान करता है ताकि उनके संचयी सामाजिक-आर्थिक और राजनीतिक अलाभ की स्थिति को कम कथिया जा सके।
- महिलाओं को [लगि के आधार पर भेदभाव नहीं कथि जाने](#) ([अनुच्छेद 15](#)) और [वधिके समक्ष समान संरक्षण](#) ([अनुच्छेद 14](#)) का मूल अधिकार प्राप्त है।
- संवधान में प्रतयेक नागरकिक के लथि यह मूल कर्तव्य नरिधारित कथिया गया है कि वह महिलाओं की गरमि के वरिद्ध प्रचलति अपमानजनक प्रथाओं का त्याग करे।

भारत में वे कौन-से क्षेत्र हैं जहाँ महिलाओं ने असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन कथिया है?

- वर्षों से महिलाओं ने समाज के अन्याय और पूर्वाग्रह को झेला है। लेकिन आज बदलते समय के साथ उन्होंने अपनी एक पहचान बना ली है, उन्होंने लैंगिक रूढ़ियों की बेड़ियों को तोड़ दिया है और अपने सपनों एवं लक्ष्यों की प्राप्तिके लथि मजबूती से खड़ी हैं। उदाहरण के लथि हम कुछ महिलाओं और उनकी हाल की उपलब्धियों को देख सकते हैं:
 - [सामाजिक कार्यकर्ता](#):
 - [सधुिताई सपकाळ\(पदम श्री 2021\)](#) – अनाथ बच्चों की परवरशि
 - [पर्यावरणवदि](#):
 - [तुलसी गौड़ा\(पदम श्री 2021\)](#) – वे 'वन वशि्वकोश' (Encyclopaedia of Forest) पुकारी जाती हैं
 - [रक्षा क्षेत्र](#):
 - [अवनी चतुर्वेदी](#) – एकल रूप से लड़ाकू वमिान (मगि-21 बाइसन) का उड़ान भरने वाली पहली भारतीय महिला
 - [खेल क्षेत्र](#):
 - [मैरी कॉम](#) – ओलंपिक में बॉक्सगि में मेडल जीतने वाली देश की पहली महिला।
 - [पीवी सधुि](#) – दो ओलंपिक पदक (कांस्य- टोक्यो 2020) और (रजत- रथिो 2016) जीतने वाली पहली भारतीय महिला।
 - [भारतीय महिला क्रकिकेट टीम](#) – फाइनलसिट (सलिवर मेडल), राष्ट्रमंडल खेल 2022
 - [अंतर्राष्ट्रीय संगठन में](#):
 - [गीता गोपीनाथ](#) – अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) में पहली महिला मुख्य अर्थशास्त्री।
 - [अंतरकष प्रौद्योगिकी](#):

- टेसी थॉमस - 'मसाइल वुमन ऑफ इंडिया' के रूप में प्रतियोगिता ([अग्न-IV](#) मसाइल परियोजना से संबद्ध)
- **शिक्षा क्षेत्र:**
 - **शकुंतला देवी** - सबसे तेज़ मानव संगणना का गनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड ।
 - **शानन ढाका** - राष्ट्रीय रक्षा अकादमी प्रवेश परीक्षा (NDA का पहला महिला बैच) में AIR 1
 - UPSC सविलि सेवा परीक्षा 2021 में शीर्ष 3 अखिल भारतीय बैंक महिला उम्मीदवारों द्वारा हासिल की गई ।

भारत में महिलाओं से संबंधित चिंता के वर्तमान क्षेत्र

- **पुरुष महिला साक्षरता दर में अंतर:** हमारे समाज में पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिये शिक्षा के अवसर की समानता सुनिश्चित करने के सरकार के प्रयासों के बावजूद भारत में [महिलाओं की साक्षरता दर](#), विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, अभी भी बदतर है ।
 - ग्रामीण भारत में विद्यालय दूर स्थिति हैं और सुदृढ़ स्थानीय कानून व्यवस्था के अभाव में बालिकाओं के [लैंगिक शिक्षा के लिये लंबी दूरी की यात्रा करना](#) असुरक्षित लगता है ।
 - **कन्या भ्रूण हत्या, दहेज और बाल विवाह** जैसी पारंपरिक प्रथाओं ने भी समस्या में योगदान दिया है जहाँ कई परिवारों को बालिकाओं को शिक्षित करना आर्थिक रूप से अव्यवहारिक लगता है ।
- **लैंगिक भूमिका के संबंध में रुढ़िग्रस्तता:** अभी भी भारतीय समाज का एक बड़ा तबका यह मानता है कि वित्तीय ज़िम्मेदारियाँ नभाने और बाहर जाकर कार्य करने की भूमिका पुरुषों की है ।
 - लैंगिक भूमिका के संबंध में रुढ़िग्रस्तता ने आमतौर पर महिलाओं के प्रतियोगिता और भेदभाव को जन्म दिया है ।
 - उदाहरण के लिये, महिलाओं को बच्चों के पालन-पोषण संबंधी उनके कार्यों के कारण कर्मियों/श्रमिकों के रूप में कम विश्वसनीय माना जाता है ।
- **समाजीकरण प्रक्रिया में अंतर:** भारत के कई भागों में विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, पुरुषों और महिलाओं के लिये अभी भी समाजीकरण के मानदंड अलग-अलग हैं ।
 - महिलाओं से मृदुभाषी, शांत और चुप रहने की अपेक्षा की जाती है । उनसे निश्चित तरीके से चलने, बात करने, बैठने और व्यवहार करने की अपेक्षा होती है । इसकी तुलना में पुरुष अपनी इच्छानुसार कैसा भी व्यवहार प्रदर्शित कर सकता है ।
- **वधायिका में महिलाओं का प्रतिनिधित्व:** पूरे भारत में विभिन्न वधायी निकायों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व कम रहा है ।
 - **अंतर-संसदीय संघ (Inter-Parliamentary Union- IPU)** और **संयुक्त राष्ट्र- महिला (UN Women)** की एक रिपोर्ट के अनुसार, संसद में निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों की संख्या के मामले में भारत 193 देशों के बीच 148वें स्थान पर था ।
- **सुरक्षा संबंधी चिंता:** भारत में सुरक्षा के क्षेत्र में नरितर प्रयासों के बावजूद महिलाओं को भ्रूण हत्या, [घरेलू हिंसा](#), बलात्कार, तस्करी जबरन वेश्यावृत्त, ऑनर कलिगि, कार्यस्थल पर [यौन उत्पीड़न](#) जैसी विभिन्न स्थितियों का सामना करना पड़ता है ।
- **'पीरियड पॉवर्टी' (Period Poverty):** पीरियड पॉवर्टी विश्व के कई देशों, विशेष रूप से भारत में गंभीर चिंता का विषय है. पीरियड पॉवर्टी मासिक धर्म को ठीक से प्रबंधित करने के लिये आवश्यक स्वच्छता उत्पादों, मासिक धर्म शिक्षा और स्वच्छता एवं साफ-सफ़ाई सुविधाओं तक पहुँच की कमी को इंगित करती है ।
 - वर्ष 2011 में [संयुक्त राष्ट्र बाल कोष \(UNICEF\)](#) द्वारा किये गए एक अध्ययन से प्रकट हुआ कि भारत में केवल 13% बालिकाओं को पहले मासिक धर्म से गुज़रने के पूर्व से इसके बारे में पता था ।
- **'ग़ुलास सीलिंग':** न केवल भारत में बल्कि विश्व भर में महिलाओं को एक सामाजिक बाधा का सामना करना पड़ता है जो उन्हें प्रबंधन क्षेत्र में शीर्ष नौकरियों तक पदोन्नत होने से रोकता है ।

महिला सशक्तीकरण से संबंधित प्रमुख सरकारी योजनाएँ

- [बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना](#)
- [उज्ज्वला योजना](#)
- [स्वाधार गुह](#)
- [प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना](#)
- [प्रधानमंत्री महिला शक्तिकेंद्र योजना](#)
- [वन स्टॉप सेंटर](#)

आगे की राह

- **शिक्षा के बेहतर अवसर:** महिलाओं को शिक्षा देने का अर्थ है पूरे परिवार को शिक्षा प्रदान करना । महिलाओं में आत्मविश्वास पैदा करने में शिक्षा अहम भूमिका निभाती है ।
 - यह समाज में महिलाओं की स्थिति को बदलने का भी अवसर देती है । शिक्षा बेहतर तरीके से निर्णय लेने में सक्षम बनाती है और आत्मविश्वास जगाती है ।
 - बालिकाओं के लिये शिक्षा के अधिकार की पुष्टि करने और शैक्षणिक संस्थानों में भेदभाव से मुक्त रहने के उनके अधिकार को सुनिश्चित करने के लिये शिक्षा नीतियों को और अधिक समावेशी बनाने की आवश्यकता है ।
 - इसके साथ ही, शिक्षा नीतियों को युवाओं और बालकों को लक्षित करना चाहिये कि बालिकाओं और महिलाओं के प्रति उनके दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव आए ।
- **'स्किलिंग' और 'माइक्रो फाइनेंसिंग':** कौशल निर्माण या स्किलिंग और सूक्ष्म वित्तपोषण या माइक्रो फाइनेंसिंग से महिलाएँ आर्थिक रूप से स्थिर बन सकती हैं और इस प्रकार वे समाज के दूसरे लोगों पर निर्भर नहीं बनी रहेंगी ।
 - महिलाओं को बाज़ार की मांग के अनुरूप गैर-पारंपरिक कौशल में प्रशिक्षण देना और महिलाओं के लिये सार्वजनिक एवं नज्दी क्षेत्र में वृहत

रोज़गार सृजति करना वित्तीय सशक्तीकरण के लिये महत्त्वपूर्ण है।

- **महिलाओं की सुरक्षा:** देश भर में महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिये वर्तमान सरकार की पहल और तंत्र के बारे में महिलाओं के बीच जागरूकता बढ़ाने हेतु एक बहु-कषेत्रीय रणनीति तैयार की जानी चाहिये।
 - 'पैनकि बटन', 'नरिभया पुलिस स्कवॉड' महिला सुरक्षा की दृष्टि में कुछ सराहनीय कदम हैं।
 - 'महिलाओं का कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न (नविवरण, परतषिध और परततिष) अधिनियम, 2013' को महिलाओं के लिये सुरक्षित कार्यस्थल सुनिश्चित करने और महिलाओं के स्थिति और अवसर की समानता के अधिकार का सम्मान करने वाले एक सक्षम वातावरण का निर्माण करने के लिये अधिनियमति कयिा गया था।
- **शासन के नमिनतम स्तर पर नरिदषिट कार्य:** शासन में अधिक समावेशिता लाने और भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिये शासन के नमिनतम स्तर पर परयिोजनाओं को तैयार करने, समर्थन करने और बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिये:
 - **स्वागतम् नंदनी (कटनी, मध्य प्रदेश):** यह पहल बालिकाओं के जन्म का उत्सव मनाने के उद्देश्य से की गई है।
 - 'लाडली लक्ष्मी योजना' के तहत बेटों के जन्म का जश्न मनाने के लिये एक छोटे से आयोजन के साथ नवजात बच्चियों के माता-पिता को बेबी कटि प्रदान कयिा जाता है।
 - **नन्हे चनिह (पंचकुला, हरयिाणा):** आंगनवाडी कार्यकरताओं (AWWs) द्वारा प्रोत्साहति इस कार्यक्रम के तहत बच्चियों को उनके परिवारों द्वारा स्थानीय आंगनवाडी केंद्रों में लाया जाता है।
 - उनके पैरों के निशान एक चार्ट पेपर पर अंकति कयिे जाते हैं और आंगनवाडी केंद्र की दीवार पर माँ और बच्चियों के नाम के साथ लगाए जाते हैं।
- **शकषिा में प्रोत्साहन:** बालिकाओं के उच्च ड्रॉपआउट दर पर अंकुश के लिये उच्च शकषिा हेतु अपेक्षाकृत उच्च वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करने की आवश्यकता है।
 - शकषिा, सूचना और संचार अभयिानों के माध्यम से समान बाल लगिानुपात प्राप्त करने में सक्षम होने वाले ग्रामों/जिलों को पुरस्कृत कयिा जाना चाहिये।
 - **ई-गवर्नेंस** पर अतिरिक्त बल दयिा जाना चाहिये ताकि छात्राओं हेतु छात्रवृत्त के लिये केंद्र और वभिनिन राज्य सरकारों द्वारा जारी कयिे जाने वाले परवियय की समयबद्ध जाँच हो सके।
- **ग्रामीण स्तर पर बुनयिादी सुवधियाओं में सुधार:** बुनयिादी ढाँचे में सुधार से घरेलू कार्य का बोझ कम हो सकता है।
 - उदाहरण के लिये, ग्रामीण महिलाओं के घरेलू कार्यों में प्रायः पानी और ईंधन की लकड़ी लाने जैसे कठिन कार्य शामिल होते हैं। पाइप से पेयजल की आपूर्ति और स्वच्छ प्राकृतिक गैस (जसिमें सुधार आ भी रहा है) इस भार को कम करेगा।
- **महिला वकषिा से महिला नेतृत्वकारी वकषिा की ओर:** महिलाओं को भारत की प्रगत और वकषिा के वास्तुकार की भूमकिा सौपी जानी चाहिये, बजाय इसके कि वे वकषिा के फल की नषिकरयिे प्राप्तकरता भर बनी रहें।
 - **महिला नेतृत्वकारी वकषिा** का शृंखला प्रभाव नरिविाद है क्योंकि एक शकषिा और सशक्त महिला आने वाली पीढ़ियों के लिये शकषिा और सशक्तीकरण सुनिश्चित करेगी।

अभ्यास प्रश्न: भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने में कौन-सी बाधाएँ मौजूद हैं? महिला सशक्तीकरण से संबंधति कुछ प्रमुख सरकारी पहलों पर प्रकाश डालें।

UPSC सविलि सेवा परीकषा, वगित वर्षों के प्रश्न (PYQs)

प्रारंभकि परीकषा

प्रश्न: स्वाधार और स्वयं सदिध महिलाओं के वकषिा के लिये भारत सरकार द्वारा शुरू की गई दो योजनाएँ हैं। उनके बीच अंतर के संबंध में, नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयिे : (2010)

1. स्वयं सदिध उन लोगों के लिये है जो प्राकृतकि आपदाओं या आतंकवाद से बची महिलाओं, जेलों से रहिा महिला केंदरियों, मानसकि रूप से वकृत महिलाओं आदि जैसी कठिन परस्थितियों में हैं, जबकि स्वाधार स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के समग्र सशक्तीकरण के लिये है।
2. स्वयं सदिध स्थानीय स्व-सरकारी नकियाओं या परतषिटति स्वैच्छकि संगठनों के माध्यम से कार्यानवति कयिा जाता है जबकि स्वाधार राज्यों में स्थापति आईसीडीएस इकाइयों के माध्यम से कार्यानवति कयिा जाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (d)

मुख्य परीकषा

प्रश्न 1: "महिलाओं का सशक्तीकरण जनसंख्या वृद्धिको नरिंत्रति करने की कुंजी है।" वचिना कीजयिे। (2019)

प्रश्न 2: भारत में महिलाओं पर वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों की चर्चा कीजिये? (2015)

प्रश्न 3: महिला संगठन को लैंगिक पूर्वाग्रह से मुक्त बनाने के लिये पुरुष सदस्यता को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। टिपिणी कीजिये। (2013)

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/status-of-women-in-india>

